



उत्कलिका

कविता विशेषांक : वर्ष : 2021

पूर्व तट रेलवे
मुख्यालय



राजभाषा विभाग, मुख्यालय की गृह पत्रिका



(विद्या भूषण)
महाप्रबंधक, पूर्व तट रेलवे
भुवनेश्वर



पूर्व तट रेलवे
मुख्यालय

महाप्रबंधक का संदेश

पूर्व तट रेलवे की हिंदी ई-पत्रिका 'उत्कलिका' का अप्रैल - सितंबर' 21 का कविता विशेषांक आपको सौंपते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है कि हम अपने संगठन में नित्य नई उभरती हुई चुनौतियों का सामना करने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के लक्ष्यों व संवैधानिक दायित्वों को पूरा करने में भी सतत् तत्पर रहते हैं।

भाषा विचारों की वाहक होती है तो पत्रिकाएं हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं वैचारिक विकास की गाथा। इससे हमें रचनाकारों की अभिव्यक्ति से संप्रेषण तक की शैली को समझने का अवसर मिलता है। 'उत्कलिका' हमारी रेलवे के हिंदी ज्ञान का आईना है। इससे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग हेतु अनुकूल माहौल बनेगा और राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में भी प्रगति आएगी।

मुझे आशा है कि सभी इस पत्रिका को पढ़ेंगे और राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाएंगे।

शुभकामनाओं के साथ,

(विद्या भूषण)
महाप्रबंधक

महाप्रबंधक का संदेश



पूर्व तट रेलवे
मुख्यालय

अपर महाप्रबंधक का संदेश

मेरे लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि राजभाषा विभाग, पूर्व तट रेलवे (मुख्यालय) ने अपनी गृह पत्रिका 'उत्कलिका' का अप्रैल - सितंबर' 21 कविता विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है। आज हिंदी विश्वभाषा के रूप में वैश्विक पटल पर विराजमान होती जा रही है। हिंदी संपर्क भाषा के साथ-साथ प्रभावशाली काम काज की भाषा बने, इस के लिए सबका निरंतर और सम्मिलित होकर प्रयास आवश्यक है।

मैं पूर्व तट रेलवे में राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूं और आशा करता हूं कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी इस अंक में प्रस्तुत रचनाओं से लाभान्वित होंगे।

आप सभी को मेरी शुभकामनाएं।

सुधीर कुमार

(सुधीर कुमार)

अपर महाप्रबंधक



(सुधीर कुमार)
अपर महाप्रबंधक

अपर महाप्रबंधक
का संदेश





(देवेन्द्र प्रताप लाल)
मुख्य राजभाषा अधिकारी



पूर्व तट रेलवे
मुख्यालय

मुख्य सम्पादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को देवनागरी में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया है। यह दर्जा हिंदी को इसकी विशेषताओं के कारण ही दिया गया है। आज भी हम हिंदी के साथ देशी-विदेशी भाषाओं के शब्दों को मिलाकर अपना अधिकांश कार्य चलाते हैं। यह बात अलग है कि इस भाषा में शामिल अनेक देशज-विदेशज शब्दों के मूल को पहचानने में कठिनाई अवश्य होती है। किन्तु इसे आम बोलचाल की भाषा से अलग नहीं कर सकते। समय की मांग के अनुसार प्रशासन में आम जनता की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रचलित शब्दों का इस्तेमाल आज आवश्यक हो गया है जिसकी व्यवस्था संविधान में पहले ही है।

उत्कलिका के इस अंक में प्रकाशित रचनाएं इस बात की साक्षी हैं कि रचनाकारों ने अपनी बात सहज ढंग से पद्य शैली में प्रस्तुत किये हैं। उनकी अपेक्षा है कि पाठक उनकी बातों को समझें। पत्रिका प्रकाशित करने का हमारा प्रयोजन भी यही है कि हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी अपने विचार आसानी से हिंदी में रखें और रेल के कामकाज को सहजता से करें। हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चंद्र के अनुसार :-

‘निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल’

हिंदी साहित्य के इतिहास में विभिन्न रचनाकारों की लेखनी से लेकर आज तक बदले हुए स्वरूप में हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार के लिए सतत प्रयास किये जा रहे हैं। इसके अलावा आम जनता और सरकार के बीच भाषायी दूरी को मिटाने के लिए संघ सरकार की ओर से व्यापक कार्यक्रम भी तैयार किये जाते हैं।

सभी पाठकों से यह आशा की जाती है कि पत्रिका के आगामी अंक को और अधिक सूचना-परक एवं उपयोगी बनाने के लिए अपने सुझाव हमें प्रेषित करेंगे ताकि इसे प्रकाशित करने का हमारा ध्येय पूर्ण हो सके।

हार्दिक शुभकामनाएं

(देवेन्द्र प्रताप लाल)

मुख्य राजभाषा अधिकारी

मुख्य सम्पादक की
कलम से





पूर्व तट रेलवे
मुख्यालय

सम्पादकीय

राजभाषा विभाग, पूर्व तट रेलवे (मुख्यालय) की डिजिटल हिंदी गृह पत्रिका “उत्कलिका” कविता विशेषांक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य रेलकर्मियों एवं उनके परिजनों में छिपी प्रतिभा को उजागर करने के साथ-साथ पूर्व तट रेलवे, मुख्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को भी बढ़ावा देना है। आज हिंदी विश्व-भाषा के रूप में वैश्विक पटल पर विराजमान है।

धारा 3(3) का अनुपालन, हिंदी में टिप्पणी लेखन व पत्राचार आदि मदों पर भी इस वर्ष के दौरान हमने काफी प्रगति की है। पूर्व तट रेलवे के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं, विभिन्न साहित्यकारों की जयंती, कार्यशालाओं आदि का आयोजन किया गया।

मेरा पुनः अपने सृजनशील लेखकों से अनुरोध है कि वे सतत एवं निर्बाध गति से अपना लेखन-कार्य करते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी भागीदारी का परिचय देते रहें ताकि हम समय-समय पर पाठकों के लिए नई सोच, ज्ञान एवं मनोरंजन से परिपूर्ण पत्रिका का प्रकाशन करते रहें। पाठकों से अनुरोध है कि अपने अमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराते रहें ताकि हम आगामी पत्रिका को और अधिक समृद्ध विचारों और नई सोच के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत कर सकें। उम्मीद है कि यह अंक आपको पसंद आएगा।

शुभकामनाओं सहित
धन्यवाद

(ऊषा रानी)
राजभाषा अधिकारी



(ऊषा रानी)
राजभाषा अधिकारी

सम्पादकीय





उत्कलिका

मुख्यालय की घरेलू पत्रिका

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री विद्या भूषण

महाप्रबंधक

मुख्य संपादक

श्री देवेन्द्र प्रताप लाल

मुख्य राजभाषा अधिकारी

एवं

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण)

उप मुख्य संपादक

श्री सुबास चन्द्र नाईक

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

एवं

उप मुख्य संरक्षा अधिकारी (बिजली)

संपादक

श्रीमती ऊषा रानी

राजभाषा अधिकारी

सहयोग

श्री शान्तवनु नाथ

वरिष्ठ अनुवादक

श्री एस के षडंगी

सामान्य सहायक

क्र.सं.	विषय	लेखक (सर्व श्री/श्रीमती/कुमारी)	पृष्ठा संख्या
1.	मुझे भीख नहीं चाहिये	शैलेंद्र कपिल	01
2.	संवाद होना चाहिए	विक्रमादित्य सिंह	02
3.	हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती - महादेवी वर्मा	आशीष कुमार साह	03
4.	वक्त	तपस्विनी महानंदिया	05
5.	अब वो बचपन नहीं रहा	विक्रमादित्य सिंह	06
6.	मिट्टी की खुशबू	विनोद कुमार	07
7.	कोरोना का आतंक	तपस्विनी महानंदिया	08
8.	आजादी का अमृत महोत्सव	संतोष दास	09
9.	हिन्दी मेरी पहचान	विनोद कुमार	10
10.	हिंदी सप्ताह	अमित रंजन	11
11.	इंतजार खत्म, संकल्प आरंभ....	शैलेंद्र कपिल	13

मुझे भीख नहीं चाहिये



□ शैलेंद्र कपिल

मुझे भीख नहीं चाहिये,
बाबू जूता पॉलिश करा लें,
दाल चावल खा लूंगा,
मुझे भीख नहीं चाहिये,
उसका चेहरा बयां कर रहा,
उसकी अतिड़ियों का सार बह रहा,
भूख उतर आई चेहरे पर,
सब्र का बोध करा कर ही रहा,
मैं अन्यत्र प्रभावित हुआ,
उसके थैले से व्यथित हुआ,
उसके रवैये से मैं मनमग्न हुआ,
उतार कर जूते मैं अतिप्रसन्न हुआ,
उसने अपनी रंग-बिरंगी,
चप्पलें उतार कर मुझे दी,
तल्लीनता से धीरे धीरे,
जूतों को मन लगाकर पॉलिश की,
मैं जूते पहन इसका नोट दे थमाया,
मैं वापिस आँख में आँख नहीं मिला पाया,
उसके मेहनताने से हो सकता अधिक मिला हो,
मैं कुछ वापिस लेने की हिम्मत नहीं जुटा पाया,
मैं उसके पेट की भूख शांत चाहता हूँ,
हर मेहनतकश इन्सान से मोल-भाव नहीं चाहता हूँ,
भीख नहीं चाहिये, मन में सभी बिठा लें,
मुझे ऐसा आत्मविश्वास हर इंसान में चाहिये,
हर इंसान में चाहिये, मुझे भीख नहीं चाहिये
मुझे भीख नहीं चाहिये....

□ पूर्व प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी

संवाद होना चाहिए



□ विक्रमादित्य सिंह

चुभन दिल में जब बढ जाए
सांसें लेना भी जब दुश्वार हो जाए
मन की पीड़ा कम करने के लिए
अपनों से संवाद होना चाहिए।

गलतफहमी जब रिस्तों के बीच आती है
विश्वास का गारा वहीं पर चरमराती है
लड़खड़ाते संबंधों की बुलंदी के लिए
रिस्तों के बीच आती है
विश्वास का गारा वहीं पर चरमराती है
लड़खड़ाते संबंधों की बुलंदी के लिए
रिस्तों में संवाद होना चाहिए।

सभी सरकारी फरमान जब बेमतलब हो
और जनता के हिस्से में सिर्फ आश्वासन हो
बेरोजगारों, भुखों, लाचारों के हक के लिए
सरकार से कलमकारों का संवाद होना चाहिए।

वतन की आबरू पर जब आंच आए
भारत माता की जय बोलने पर जब लाज आए
भटके नौजवानों को राह पर लाने के लिए
हमारे बच्चों का हमारी संस्कृति से संवाद होना चाहिए।

□ वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी
पूर्व तट रेलवे

हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती - महादेवी वर्मा



□ आशीष कुमार साह

इस आर्यावर्त की धरा में
सहस्रों वीरांगनाओं ने है जन्म लिया,
कभी मां काली तो कभी मां दुर्गा बनकर
दानवों और दैत्यों का नरसंहार किया,
तो कभी रानी लक्ष्मीबाई के रूप में आकर
अंग्रेजों का संहार किया ।

इसी भारत भूमि पर २६ मार्च १९०७ को
एक महान विभूति 'महादेवी वर्मा' जी ने जन्म लिया
इनके नाना थे, ब्रजभाषा के प्रख्यात कवि
तो माता-पिता भी थे महान विद्वान और शिक्षा प्रेमी ।

मात्र ७ वर्ष की आयु में इन्होंने
कविता का लेखन आरंभ कर दिया था,
और मात्र ९ वर्ष की अल्पायु में ही
इनका विवाह कर दिया गया था ,
लेकिन इन्होंने अपनी शिक्षा से कभी मुँह न मोड़ा
हर परीक्षा में इन्होंने है सदा प्रथम स्थान प्राप्त किया ,
लगता है जैसे मां सरस्वती ने है साक्षात् वरदान दिया ।
छायावाद थी लेखनी की आधारशिला इनकी ,

‘भावतरलता’ , ‘वैयक्तिकता’ , ‘प्रतीकात्मकता’ , चित्रात्मकता ‘अलंकारिकता’ ,
‘छायावादी एवं रहस्ययात्मक’ थी रचना शैली इनकी ।

गद्य और पद्य दोनों में था महारत हासिल इनको
‘नीहार’ , ‘रश्मि’ , ‘नीरजा’ , ‘सांध्यगीत’ , ‘यामा’ हो या ‘दीपशिखा’



इन सभी काव्य ग्रंथों ने पाठकों के मन को मोहा है,
'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएं', 'शृंखला की कड़ियां' हो या 'पथ के साथी'
इन सभी ग्रंथों ने पाठकों के अंतर्मन को छुआ है।

छायावाद के चार स्तंभों में ये एक स्तंभ कहलाती थी,
आधुनिक हिंदी के सबसे सशक्त कवियत्री होने के कारण
सारे पाठक जन इन्हें 'आधुनिक मीरा' कहकर बुलाती थी।
महान कवि निराला जी ने इन्हें
हिंदी के विशाल मंदिर की 'सरस्वती' कहकर बुलाया है,
इन्होंने अपने समयाकुल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर
उसे हिंदी का जामा पहनाया है।
हिंदी साहित्य का हर पुरस्कार इन्होंने पाया है
प्रसिद्ध 'पद्म भूषण पुरस्कार' हो या 'साहित्य अकादमी पुरस्कार'
'पद्म विभूषण पुरस्कार' हो या 'ज्ञानपीठ पुरस्कार'
सबों ने इनकी ख्याति को और भी बढ़ाया है।

बस मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि
जब -जब इस भारत भूमि पर
हिंदी भाषा के उत्थान की बात होगी,
जब -जब इस धरा पर
हिंदी की खड़ी बोली में कोमल शब्दावली के प्रयोग की बात होगी,
महादेवी वर्मा जी का नाम सबसे पहले लिया जाएगा
हिंदी के अनेकानेक कवियों और लेखक रूपी सितारों के मध्य
महादेवी वर्मा जी को ध्रुवतारा सा दर्शाया जाएगा।
महादेवी वर्मा जी को ध्रुवतारा सा दर्शाया जाएगा।

□ कंसोल ऑपरेटर
वाणिज्य विभाग

वक्त



□ श्रीमती तपस्विनी महानंदिया

वक्त किसी के लिए थमता नहीं
वक्त के आगे गुजर जाती है ज़िंदगी भी
बस याद रह जाते हैं वो बीते वक्त,
जो भुले से भी भुलते नहीं
कुछ लोग, कुछ वक्त में अपने से लगने लगते हैं
कुछ लोग पास हो के भी दूर होने लगते हैं
कुछ के साथ मजबूर रिश्ते होते हैं,
तो कुछ दूर हो कर भी दिल के करीब होने लगते हैं
वक्त सिखलाता है ना जाने कितने सीख
वक्त बतलाता है कौन है शत्रु या मित्र
वक्त बदलता है मौसम के तरह
लेकिन बदला बीता वक्त लौट कर कभी आता नहीं
वक्त कभी खुशी देता है, तो कभी गम,
कभी आशु में ज़िंदगी डुबा देता है
तो कभी खुशियों से झोली भर देता है
वक्त के लिए होते हैं हजारों सवाल
जिसका जवाब कभी मिलता नहीं
अजीब दास्तां है, वक्त कभी रुकता नहीं
वक्त के मोल को जो समझ गया,
जानो वह ज़िंदगी जी गया,
वक्त की जो करता बंदगी,
मानो वक्त सिर्फ उसी का हो गया,
वक्त से जो करे मुहब्बत,
समझो, खुशियों ने दी है दस्तक।

□ कार्यालय अधीक्षक / चिकित्सा विभाग

प्र.मु.चि.नि. कार्यालय

अब वो बचपन नहीं रहा



□ विक्रमादित्य सिंह

वो बचपन अब नहीं रहा
अब वो बचपन नहीं रहा
जो घंटो खेला करते थे
तितलियों के संग उड़ते थे
पेड़ों से बातें करते थे
बुलबुल, गौरेया, गिलहरी संग
घंटों खेला करते थे।
अब वो बचपन नहीं रहा
जो घंटो खेला करते थे.....

बैर, जामुन, आमों के लिए
कभी नहीं तरसते थे
बाग किसी का भी हो
अपना अधिकार समझते थे
क्या हुआ गर माली ने
दो चार भला बुरा कह दिया
डिहवार बाबा का प्रसाद समझकर
उसको भी खा जाते थे
अब वो बचपन नहीं रहा
जो घंटो खेला करते थे...

जाति-धर्म मजहब से कोई वास्ता न था
ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी समझ आता न था
ईद, दिवाली, होली संग-संग मनाते थे
सेवइयां कहीं भी मिले प्यार से खा लेते थे
पर अब वो बचपन नहीं रहा
जो घंटो खेला करते थे....

गुली-डंडा, बुढ़िया कब्बडी अब कौन खेलता है
झुला लगा दो सावन में पापा से अब कौन कहता है
खेलने वाले बचपन अब मोबाईल में व्यस्त है
पतंगों की जगह कम्प्यूटर पर राँकेट उड़ाते हैं
आज का बचपन खाना, खेलना, पढ़ना लिखना
सब घर में ही करते हैं
और एक हम थे जो घर में सिर्फ
सोने ही जाया करते थे
अब वो बचपन नहीं रहा
जो घंटो खेला करते थे

सुनी है गलियां, सुनी है सड़के
गाँवों में रौनक कहीं नहीं है

जिनसें फिजाएं चमकती रहती
अब वो बचपन कहीं नहीं है
अनमना सा सुबह, घुटन सी शामें
शरारत करता बचपन कहीं नहीं है
एक दौर वो भी था
फुरसत के लम्हे थे, सतरंगी सपने थे
रहता था बस्ता खाली, जी भर के जीते थे
आज बड़े बड़े सपने हैं
वजन से भारी वस्ते हैं
पर इसमें धुमिल कहीं बचपन है
अब वो बचपन नहीं रहा
जो घंटो खेला करते थे।
अब ना संग दादी है ना नानी है
ना कोई कथानक है ना कोई कहानी है
घर भर के खिलौने है लेकिन
एक दिन खेले, दो दिन खेले
पर वो लगाव नहीं हो पाता है
पहले मिट्टी की गुड़ियाँ होती थी
हम दुल्हन की तरह सजाते थे
बरात संग डोली भी मंगवाते थे
उसकी कानी अंगुली टूट जाए
तो हम घंटों रोया करते थे
अब वो बचपन नहीं रहा
जो घंटो खेला करते थे
वो बचपन अभावो में रहते थे
पर चेहरा खुशियों से दमका करते थे
आज बचपन बहुत समृद्ध है लेकिन
वो बात नहीं प्यारे
बचपन तो वही है लेकिन
बचपना कहीं नहीं प्यारे।

□ वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर

‘मिट्टी की खुशबू’



□ विनोद कुमार

ऐ मिट्टी तेरी खुशबू हमेशा खींच लाती है,
तेरी आबोहवा में कुछ बात ही ऐसी है।

तेरी गलियों में मेरी बचपन की यादें हैं,
तेरी पगडंडियों पर मेरे पैरों की छापें हैं।

सरसो के पीले फूल ,गेहूं की झुकी बाली
धान के पत्तों की सरसराहट ,खेतों की हरियाली।

बैलों के घंटियों की स्वर,और विरहे की तान
कोयल की कुहू- कुहू,पपीहे की गान।

पीपल की छांव ,अमराईयों की महक
काश के फूल, महुए की टपक।

बरगद की लटकती बेलें,मक्के की बल खाती फसल
तालाब में डुबती-उतरती भैंसें,बच्चों की कल-कल।

काँच की गोलियाँ,गिल्ली-डंडे का खेल
छुआ-छुई लुका-छिपी,पिट्टो और रेल।

ढोलक की थाप,झाल और मृदंग
सोहर के गीत,बारहमासा का संग।

झूमर संग झुमना,आल्हा-ऊदल का गान
कीर्तन, रामधुन और प्रभु भजन।

ये सब मिलकर तेरा श्रृंगार करती है,
तेरी आबोहवा में कुछ बात ही ऐसी है।

ऐ मिट्टी तेरी खुशबू हमेशा खींच लाती है.....

□ ‘बल्लोपुरी’

वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी

भंडार लेखा/पू.त.रे.

कोरोना का आतंक



□ श्रीमती तपस्विनी महानंदिया

रहस्य संकट विश्व में है फैला
कोरोना विषाणु का सार्वभौम मैला,
आतंकी कोरोना है मनुष्य जीवन का हत्यारा,
ना जाने कितने घरों को है उजाड़ा ।

पृथ्वी थर-थर कांपती है, देखकर यह मंजर,
ना जाने कितने शहर हुए कोरोना से बंजर,
अजिब दास्तां है लाशों की, अंतिम विदाई ले ना सके,
उन लाशों के अपने भी, आखिरी दर्शन ना कर सके ।

ना परिवार, ना रिश्तेदार, ना ही दोस्त आए,
ना कोई दाह- संस्कार, ना कोई रुखसत,
अकेला चला, वो बनके बेगाना गैरों के बीच, अजनबी चित्त ।

बहुमुखी कोरोना है मौत का सौदागर,
बदले मौसम के तरह आता है बार-बार,
एक अंतराल में लेता एक अल्प विराम,
फिर वापस आता है बनके कोहराम ।

कोरोना ना करता है कोई भेद-भाव,
ना है उसका कोई धर्म-जाति, ना जाने वो अमीरी- गरीबी,
ना पहचाने वो

मूक शरीर दफन हुआ कब्र में, बन के स्त्री – पुरुष, ना बुढ़ापा-जवानी,
बस करता है मनुष्य का शिकार, बन के तांडव ।

चाहे अंजाम कुछ भी हो हमें डरना नहीं,
निडर हो के है करना सामना,
हथियार है अभी हमारा, मास्क, स्वच्छिकरण एवं छः फीट की दूरी,
एक दिन है कोरोना को हारना ।

सकारात्मक उम्मीदों को है जगाना,
विश्वास की ज्योत से उज्ज्वल भविष्य है बनाना,
कोशिश का दामन ना छोड़ना कभी,
विजयी होंगे एक दिन हम मानव सभी ।

□ कार्यालय अधीक्षक, कार्मिक विभाग
प्र.मु.का.अधी. कार्यालय

आजादी का अमृत महोत्सव

अगनित बलिदानों की गाथा,
शहादतों की अमिट कहानी,
लाल कलम से लिखी गई है
इंकलाब यह हिंदुस्तानी।
आजादी अमृत समान है,
यह महानतम से महान है,
कड़ी तपस्या से हो पाया
इस अमृत का मिलना संभव,
क्यों न बिखरे हम सब मिलकर
इस स्वर्णिम इतिहास का सौरभ ?
भारत के हर मनका उत्सव,
आजादी का अमृत उत्सव।
भारत के जन-जन का उत्सव,
आजादी का अमृत उत्सव।

जिस संस्कृति का रूप जगत में
सूरज जैसा दीप्तिमान है,
जिसके हर विस्तार नापता
फिरता पूरा आसमान है,
जिसकी शाश्वतता में गंगा,
अविचलता में स्वयं हिमालय,
जिसके बीज में ज्ञान सृष्टि का,
उगता मानवता का किसलय।
क्यों न मनाएं हम सब मिलकर
अपनी संस्कृति का यह वैभव ?
भारत के हर मन का उत्सव,
आजादी का अमृत उत्सव।
भारत के जन-जनका उत्सव,
आजादी का अमृत उत्सव।

हमने सीखा है पुरखों से
मुश्किल में मुस्काते रहना,
कुदरत ने हमको सिखलाया
संकट को अवसर में बदलना,
निज के हित से ऊपर उठकर
सबके हितकी चिंता करना,
अमन-शांति की जोत जलाकर



□ संतोष दास

सदा सत्य की राह पे चलना।
हम को सीमित साधन से भी
मिल जुलकर रहना आता है,
परोपकार में कष्ट भले हो,
पर हमको सहना आता है।
जिन मूल्यों की आज विरासत
पाकर हमको होता गौरव,
क्यों न मनाएं हम सब मिलकर
अपने इन मूल्यों का उत्सव ?
भारत के हर मन का उत्सव,
आजादी का अमृत उत्सव।
भारत के जन-जन का उत्सव,
आजादी का अमृत उत्सव।

देश नहीं औरों पर निर्भर
दिखा रहे हम कदम-कदम पर,
हम मंगल तक पहुँच गए हैं,
आज हमारे अपने दम पर,
अपने खेतों के अनाज
बाहर भी खुशबू फैलाते हैं,
अपनी प्रतिभा के परचम अब
दुनिया भरमें लहराते हैं।
'उनका' था सपना स्वराज का,
हमने देखा है सुराज्य का,
'उनके' उत्सर्गों के बल पर
लक्ष्य दिखना हुआ है संभव,
क्यों न मनाएं हम आजादी
दिलवाने वालों का प्रभाव ?
भारत के हर मन का उत्सव,
आजादी का अमृत उत्सव।
भारत के जन-जन का उत्सव,
आजादी का अमृत उत्सव।

□ दक्षता निरीक्षक, सा.प्र.

‘हिन्दी मेरी पहचान’

हिन्दी मेरी पहचान
हिन्दी मेरा अभिमान,
हिन्दी हमारी जान
हिन्दी हमारी शान।



□ विनोद कुमार

जन-जन की ये भाषा
अभिव्यक्ति की परिभाषा,
इसके बिना लगता
जीवन अधुरा सा।
हिन्दी मेरी पहचान.....

‘निराला’ की प्रखर वाणी
‘दिनकर’ का तेज है ये,
‘पंत’ की सुकोमलता का परिचायक
‘रेणु’ का आंचलिक परिधान है ये।
हिन्दी मेरी पहचान.....

‘तुलसी’ के चौपाई
दोहे ‘रहीम’ के,
‘सूर’ के पद
भाषा ये ‘मीरा’ के प्रेम की।
हिन्दी मेरी पहचान.....

‘गोदान’ का ये ‘हरिया’
‘कबीर’ की अक्खड़ अभिलाषा,
हर वर्ग को अपने में
समाहित करने की जिजीविषा।
हिन्दी मेरी पहचान....

□ ‘बल्लोपुरी’
वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी
भंडार लेखा/पू.त.रे.

हिंदी सप्ताह



□ अमित रंजन

मुर्मू बाबू मुझ तक आए, पूछा उत्साह से एक नया सवाल,
हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में, मिलकर करें क्या हमलोग धमाल ?

भाग लेने को प्रेरित करते, पूछा सभी से, लेंगे क्या कोई भाग ?
मैंने बोला मैं हूँ, संतोष भैया हैं, देखिये और कौन ले सकता है भाग ।

करकमलों से, आदरणीय महाप्रबंधक के, समारोह का हुआ उद्घाटन,
प्रतिभागियों की बन गयी अब सूची, निर्णायकों का हुआ गठन ।

कार्यालय के काम काज से कैसे निकाली जाये फुरसत,
नहीं रहे अब समय पास में, करने को हिंदी की कसरत ।

प्रतियोगिता अब निबंध पर है, कोशिश है बस प्रतिभागी बन जाऊँ,
लिखा बस मैं, थोड़ा मोड़ा; न की कोशिश कि प्रथम ही आऊँ ।

कथाएं मिलीं तीन, एक पर जिसमें से, समीक्षा हमें सुनानी थी,
पढ पाया तो एक ही था, नाम भी नहीं जिसकी, हो सकी जुबानी थी ।

मेरी वह कथा, जिसे मैं चुन पाया, क्योंकि वह थी सबसे छोटी,
छह पन्नों की बिल्कुल अजीब, अन्य कथाओं से थी वह खोटी ।

हाथ पर लिखकर नाम लेखक का, चल पड़ा मैं समीक्षा बोलने,
मैं तो था कमजोर, पर मजबूत प्रतिभागी लगे आपस में बोलने ।

कोई बात नहीं, कोई गल्ल नहीं, मुझे तो थी इच्छा प्रयास की,
कि प्रस्तुत कर पाऊँ अपनी बातें, किरणें मिलीं अब कुछ आस की ।

जन्मदिवस पर दो साहित्यकारों के, दिया सम्मान, किया गुणगान,
अमर रहें वे और उनकी रचना, जो रहें हैं हमारे देश की शान ।

टिप्पण लेखन का दिन आया, पूछेंगे शायद सिर्फ टिप्पण और प्रारूपण,
पर प्रश्नपत्र तो निकला बहुविध, बिलकुल था जैसे पत्र में विवरण ।



तत्पश्चात होने को आयी वाक प्रतियोगिता, जिसमे था एक विषय पर बोलना,
दो में से चुना गया एक विषय को, हमें अब था वेतन और महंगाई पर बोलना।

लगे बोलने वेतन के सदुपयोग पर, और तो और महंगाई की मार पर,
कोई पेट्रोल की बढ़ी कीमत को कोसता, कोई रोया कोरोना की वार पर।

फिल्म समीक्षा थी एक नयी प्रतियोगिता, जिज्ञासा और उमंग से थे सभी भरपूर,
फिल्म देखी, लगे सभी बोलने, अब तो आयी मेरी बारी, अब है मुझे बोलना जरूर।

जो कुछ थी आयी समझ में, कह डाला केवल एक ही स्वर में,
उत्सुकता और उमंग के साथ, विचरने लगा हिंदी की लहर में।

अंतिम चरण था कविता पाठ, किया सभी ने माँ सरस्वती को प्रणाम,
एक एक कर सुनाई सभी ने, जैसे जैसे पुकारे गए प्रतिभागियों के नाम।

कुछ के स्वरचित, किसीने अन्य कवियों की कृत, किया काव्य का पाठ,
दुखड़ा सुनाई किसीने मजदूरों की, किया किसी ने रश्मि रथी का पाठ।

उत्साहित, जिज्ञासु और जोशीले, हुए प्रतिभागी सभी मन मगन,
एक एक कर जब कविता सुनाई, प्रफुल्लित हुआ निर्णायक का मन।

प्रेरित किया राजभाषा अधिकारियों ने, लिखने को रचनाएँ अनेक
सौंपना था शीघ्र ही, कविता विशेषांक के लिए रह गए दिन कुछ एक।

प्रतिभागियों से प्रेरित होकर, लिख पाया मैं यह कविता हूँ,
धन्यवाद है हिंदी विभाग की, कि इस कविता का मैं रचयिता हूँ।

□ दक्षता निरीक्षक,
सामान्य प्रशासन विभाग

इंतजार खत्म, संकल्प आरंभ....

फिर सुबह हुई
फिर इंतजार खत्म हुई
फिर सरिता बह चली
फिर भावों की अभिव्यक्ति चल निकली



□ शैलेंद्र कपिल

न शिकायत न शिकवा,
न उलाहना न ही फरियाद
किताब खोली मिला कोरा पन्ना
आओ निश्चित करें गंतव्य अपना

अपनापन महसूस सा होने लगा
प्रकृति संग, धरा संग, संघर्ष से प्रभावित
फूलों पत्तों पत्थरों से शुरू हो चला
सिलसिला
एक नयी फिजा संग बदलती आबो-हवा, महकती सी रजा,

कभी अनूकूल तो खिलाफत करती
हवाएं
कभी हिफाजत तो कभी कहर ढाती हवाएं
भादों मास में बादलों और सूरज
की कशमकश,
श्रृंगार करती नीले अम्बर का, इन्द्रधनुष सी इतराती मौसमी बाहें

हो जाते एक संकल्प आज फिर
रद्दोबदल कर हो नया दौर शुरू,
अनायास ही बदलती परिस्थितियों में
एक मुकाम हासिल करने की उड़ान भरने की चाहत हो
फलित.....।।

□ पूर्व प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी

हिंदी सप्ताह - 2021

उद्घाटन समारोह के अवसर पर महाप्रबंधक, अपर महाप्रबंधक, महाप्रबंधक के सचिव, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अन्य विभागाध्यक्ष दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

14 सितंबर 2021



हिंदी सप्ताह - 2021



सप्ताह - 2021 हिंदी



सप्ताह - 2021 हिंदी



हिंदी सप्ताह - 2021



સપ્તાહ - 2021
દિવસ



हिंदी सप्ताह -2021



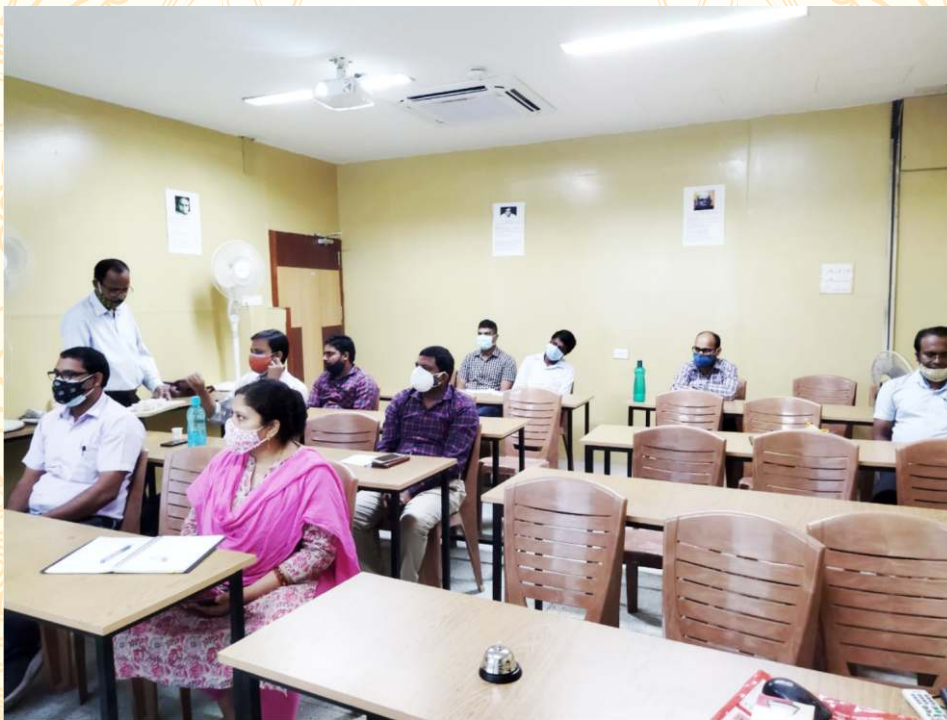
हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता

14 सितंबर 2021



हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित कहानी समीक्षा प्रतियोगिता

15 सितंबर 2021



हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित
भारतेन्दु हरिश्चंद्र एवं सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जयंती कार्यक्रम
15 सितंबर 2021



हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित हिंदी वाक् प्रतियोगिता

16 सितंबर 2021



हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

16 सितंबर 2021



हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित हिंदी कविता पाठ कार्यक्रम

17 सितंबर 2021



हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित फिल्म समीक्षा प्रतियोगिता

17 सितंबर 2021





पूर्व तट रेलवे
मुख्यालय